ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

बॉदा–चित्रकूट परिक्षेत्र में वनाधारित उद्योग एवं पर्यावरण : एक प्रतीकात्मक अध्ययन

शिवशंकर द्विवेदी * रमाकान्त द्विवेदी **

**सहायक प्राध्यापक भूगोल , एस.आर.एस. पी.जी. कालेज, नरैनी बॉदा (उत्तर प्रदेश)*

***सहायक प्राध्यापक भूगोल , एस.आर.एस. पी.जी. कालेज, नरैनी बॉदा (उत्तर प्रदेश)*

सारांश

वन जीवन के आधार का एक अभिन्न अंग है, इसके अभाव में जीवन और ऊर्जा के साथ सभ्यता का विकास वनों से ही सम्भव हुआ है। वन मानव को आश्रय और भोजन भी प्रदान करते ही हैं इसके साथ आर्थिक ग्रामीण विकास में अपना योगदान भी देते हैं। वन की उपयोगिता मानव जीवन में महत्वपूर्ण है, अध्ययनगत जनपद में विभिन्न वस्तुओं की स्थानीय मॉग के आधार पर वन उद्योगों का विकास हुआ है। वनों से प्राप्त उपजों पर आधारित उद्योग धन्धे जनपद के विभिन्न भागों में फैले हुए हैं, जो स्थनीय लोगों को रोजगार प्रदान कर रहे है, उसी स्तर से पर्यावरण ह्रास सम्भव हुआ है।

प्रस्तावना

मानवीय इतिहास में लकड़ी का प्रयोग ईंधन तथा रचनात्मक कार्यों के उद्देश्य से हुआ है, यद्यपि अधिक से अधिक इसका प्रयोग फर्नीचर और अन्य उपयोगी वस्तुओं में हुआ है।[1] यह कई उद्योगों का कच्चा माल भी हो गया है। प्राकृतिक पर्यावरण से ही अधिकांश संसाधनों की उपलब्धि होती है, मानव केवल पदार्थ का स्वरूप परिवर्तित कर उसे अपनी उपयोगिता के अनुसार ढ़ाल देता है। अतः वनों का मानव विकास एवं आर्थिक विकास से अटूट सम्बन्ध हैं। वर्तमान परिवेश में वनो का विनाश तीव्र से तीव्रोत्तर होता जा रहा है, जो निकट भविष्य में पर्यावरणीय समस्याऐं उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होगीं। अनेक प्राकृतिक संसाधन अब समाप्ति की कगार पर हैं, अतः आवश्यकता है कि विकास इस प्रकार हो जिससे एक ओर संसाधनों द्वारा आर्थिक विकास के लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके दूसरी ओर पर्यावरण भी संरक्षित रहे, जिससे शाश्वत् विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र– स्थिति एवं विस्तार, क्षेत्रफल व जनसंख्या

बॉदा–चित्रकूट परिक्षेत्र बुन्देलखण्ड़ व देश का अत्यन्त पिछड़ा भू–भाग है। यह संसार के उत्तरी गोलार्द्ध के कर्क रेखा के उत्तर 24^0 53' से 25^0 55' उत्तरी अक्षांश तथा 80^0 07' से 81^0 34' पश्चिमी देशान्तर तक फैला है। जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 7645 वर्ग किलोमीटर है। वर्तमान जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 2791140 जिसमें 1297543 महिला हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों की पहचान कर उनकी उपयोगिता एवं उत्पादकता का वैज्ञानिक ढंग से मूल्यांकन करना एवं संसाधनों के विकास में बाधक समस्याओं को प्रकाश में लाना एवं उनकी आर्थिक उपयोगिता को पर्यावरण हित की पहचान करना है।

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

विधि तन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकनात्मक एंव वि" लेशणात्क विधि तन्त्रों का प्रयोग किया गया है, ताकि आर्थिक लाग एवं रोजगार के साथ सतत टिकाऊ पर्यावरण को विकसित किया जा सके।

वनाधारित उद्योग–धन्धे

बॉदा–चित्रकूट परिक्षेत्र में वनों से प्राप्त उत्पाद विभिन्न उद्योग–धन्धों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है। जिसमें कागज, बीड़ी, खिलौने, फर्नीचर, सजावट की वस्तुऐं, आयुर्वेदिक दवाऐं, कोयला निर्माण आदि अध्ययनगत क्षेत्र के वनाधारित उद्योग–धन्धें हैं। आजादी के पहले वनाधारित उद्योग–धन्धों की संख्या अत्यन्त कम थी। वर्तमान बॉद–चित्रकूट परिक्षत्र में जनपद में 1000 से अधिक छोटी–बड़ी इकाइयॉ क्रीयाशील हैं, जो विकास के रूप में परलक्षित हो रही है।

अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि लगभग 85% वनाधारित उद्योग–धन्धों की इकाइयॉ कस्बों या नगरों में स्थापित हैं, जिनमें नरैनी, बॉदा, बबेरू, अतर्रा, कर्वी, राजापर, मानिकपुर, चित्रकूट, मऊ प्रमुख क्षेत्र हैं तथा शेष 15% इकाइयॉ ग्रामीण आंचलों में विकसित हैं। इन इकाइयों से परिक्षेत्र में लगभग 3500 से अधिक लोगों को रोजगार मिल सका है। उपरोक्त साक्ष्य से स्पश्ट होता है कि बॉदा–चित्रकूट परिक्षेत्र में वनाधारित उद्योग क्षेत्र अत्यन्त कमजोर है। परिक्षेत्र में फर्नीचर उद्योग में 2000 से अधिक, आरा मशीन में 300 से अधिक, काष्ठ शिल्प 100 से अधिक, पत्थर मूर्ति निर्माण में 100 से अधिक, अगरबत्ती में 130, कागज की दफती, आयुर्वेद दवा निर्माण, डलिया, बीड़ी, दोना–पत्तल तथा रस्सी बनाने के उद्योगों में लगभग 1000 से अधिक लोग कार्यरत हैं।[2]

अध्ययनगत परिक्षेत्र पर्यावरण की दृष्टि से अभी सुरक्षित परिक्षेत्र है, लेकिन नगरीकरण विकास वन विनाश का उदहरण है। पर्यावरण का सखद क्षेत्र कहलाने वाला बॉदा–चित्रकूट परिक्षेत्र वन विनास से जूझ रहा है, जो एक चिंता का विषय क्षेत्र व क्षेत्र के लोगों के लिए है। वनाधारित उद्योगों का अल्प विकास ने यहॉ के वनों को संरक्षित किया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि बॉद–चित्रकूट परिक्षेत्र में अनेक संसाधनों की बहुलता होते हुये भी इस क्षेत्र का विकास नहीं हो पाया है। जिसका प्रमुख कारण संसाधनों का अविवेकपूर्ण उपयोग रहा है। जनपद में वनाधारित उद्योग अभी अपनी पुरानी अवस्था में है, अध्ययन परिक्षेत्र अपनी कुल जनसंख्या में से मात्र 8,130 लोग को ही वनाधारित उद्योग–धन्धों में लगा सका है, जो परिक्षेत्र की कुल जनसंख्या का 0.00291% ही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

i. फ्रीमैन, टी.डब्ल्यू. : हन्ड्रेड इयर्स ऑफ ज्याग्रफी

ii. डॉ. मेवाराम : प्रादेशिक एवं भारत का भूगोल, भारत भारती प्रकाशन 11वां संस्करण एण्ड कम्पनी मेरठ

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

iii. तिवारी आर.एन. : लोकेशन एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ लार्ज स्केल इन्डस्ट्रीज इन यू.पी. अप्रकाशित डी. लिट. थीसिस 1965

iv. भारत 2002, जिला साख्यकि पत्रिका बॉदा, चित्रकूट धाम जनपद

v. जिला वन पुस्तिका

www.ijahms.com